☆ मृत्यु के पश्चात भी शत्रुता

प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद और प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल

दया प्रकाश सिन्हा
आई ए एस (अवकाश प्राप्त)

आजाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद, प्रथम प्रधानमंत्री से आयु में पाँच साल बड़े थे । राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 1884 में हुआ था, और जवाहर लाल का 1889 में। इस प्रकार नेहरू की 125वें जयंती वर्ष में 3 दिसंबर 2014, राजेन्द्र प्रसाद के जन्म का 130वां वर्ष था।

सत्ता के उच्चतम दो केन्द्रों पर अवस्थित राजेन्द्र प्रसाद तथा जवाहर लाल नेहरू के बीच ऐसा कुछ भी नहीं था जो समान हो। अगर एक पूरब था, तो दूसरा पच्छिम। एक दिन था, तो दूसरा रात। एक सफ़ेद था, तो दूसरा काला। यह गांधी जी का कमाल था, जिन्होने 'कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा' इकट्ठा कर के अपना 'कुनबा जोड़ा' था।

राजेन्द्र प्रसाद का जन्म एक निम्न मध्यम-वर्गीय परिवार में हुआ था। जवाहर लाल एक अति-संपन्न परिवार में जन्मे थे। अङ्ग्रेज़ी के मुहावरे का इस्तेमाल किया जाए तो कहा जा सकता है कि जवाहर लाल अपने मुंह में चाँदी की चम्मच ले कर पैदा हुए थे।

राजेन्द्र प्रसाद अति मेधावी छात्र थे, जो सदा अपनी कक्षा में प्रथम स्थान लाते थे। इसके विपरीत जवाहर लाल अति सामान्य छात्र थे।

राजेन्द्र प्रसाद बहुत ही सफल वकील थे। उनके जीवनीकरों के अनुसार अगर उन्होने कोंग्रेसी आंदोलनों में भाग न लिया होता, तो वह हाईकोर्ट के जज होते। इंग्लैंड से लाई गई बैरिस्टर की डिग्री के बावजूद, जवाहर लाल की इलाहाबाद में वकालत नहीं चली। वह अपनी पत्नी कमला तथा पुत्री इंदिरा सहित पूर्णतः अपने पिता मोतीलाल नेहरू पर अवलम्बित थे। उनका मन भी वकालत में नहीं लगता था। एक दिन जब पिता ने, हर पिता के समान उनको काम में मन लगा के मेहनत करने की सीख दी, तो जवाहर लाल रूठ गए। घर में खाना बंद कर दिया। चना-गुड खा कर काम चलाने लगे। साथ ही गांधी जी को भी गुहार लगाई। गांधी जी

के हस्तक्षेप से पिता-पुत्र में सुलह हुई। इसके बाद जवाहर लाल पहले के समान अपने पिता पर आश्रित हो गए।

राजेन्द्र प्रसाद ने एक पत्नीव्रत आजीवन निभाया। पत्नी छोटे क़द की थीं, और रूपवान भी नहीं थीं। इसके विपरीत जवाहरलाल रोमानी और दिलफेंक क़िस्म के आदमी थे। पत्नी कमला नेहरू के अतिरिक्त उनके एडविना नेहरू तथा पद्मजा नायडू के साथ प्रेमसंबंध जगतविख्यात हैं। भारती साराभाई, चित्रकार अमृता शेरगिल तथा श्रद्धा माता के नाम भी जोड़े जाते हैं।

राजेन्द्र प्रसाद खामोश-तबियत, सौम्य, वैष्णवी-आस्थावान, विनम्र, धर्मभीरु, व्यक्ति थे, जो प्रथम दृष्टया गंवई-गाँव के किसान लगते थे। जवाहरलाल तेज-तर्रार, अचानक आए क्रोध से विस्फोटित हो जाने वाले, पश्चिमी तौर-तरीकेवाले, धार्मिक रीतिरिवाजों को हेय दृष्टि से देखने वाले, चुस्त-दुरुस्त, दुनियाबी, सफल उच्चवर्गीय लगते थे, जो सदा अपने हाथों में एक डेढ़ फीट का डंडा रखते थे। जन सभाओं में भीड़ को अनुशासित करने के लिए वह डंडा भी चला देते थे, और अनपढ़ जनता उसी प्रकार 'जमाहिर लाल' से डंडा खाकर प्रसन्न होती थी, जैसे गाँव में जमींदार से लात खा कर।

बिहार में गांधीजी के बाद राजेन्द्र प्रसाद ही सबसे अधिक लोकप्रिय नेता थे। गांधीजी के साथ 'राजेन्द्र प्रसाद ज़िन्दाबाद' के भी नारे लगाए जाते थे। वहाँ उत्तर प्रदेश जैसी जवाहरलाल की जयजयकार नहीं होती थी।

बिहार के सच्चिदानंद सिन्हा के बाद राजेन्द्र प्रसाद 1946 में संविधान सभा के अध्यक्ष बनाए गए। 1950 से 1962 तक वह भारत के राष्ट्रपति पद पर अवस्थित रहे। वह अकेले ऐसे थे, जो दो काल-अवधियों में राष्ट्रपति रहे। अवकाश-प्राप्ति के पश्चात वह सदाकत आश्रम, पटना में रहने गए। वहाँ कुछ महीनों पश्चात उनका 1963 में देहांत हो गया।

बारह वर्षों तक सत्ता के शीर्षस्थ पद पर बने रहने के बाद भी उन्होने कभी अपने किसी परिवार के सदय को न पोषित किया, और न लाभान्वित किया। इस कला में जवाहर लाल पारंगत सिद्ध हुए। अन्तरिम प्रधान मंत्री बनाते ही उन्होने जो पहला काम किया, वह अपने प्रिय बहन विजयलक्ष्मी पंडित को रूस में भारत का राजदूत नियुक्त करने का था। कुनबा-परस्ती

में ही उन्होने सेना में जनरल ब्रज मोहन कौल को प्रोन्नति दिलवाई, जिसका परिणाम भारत-चीन युद्ध में भारत की पराजय के रूप में पूरे देश को भुगतना पड़ा।

राजेन्द्र प्रसाद को राजनीति और सत्ता के सोपान की हर सीढ़ी पर जवाहर लाल का विरोध सहना पड़ा। कॉग्रेस पार्टी उस काल में पटेल-गुट और नेहरू-गुट में विभाजित थी। राजेन्द्र प्रसाद वल्लभ भाई पटेल के साथ थे, इसलिए नेहरू उनके विरुद्ध थे।

राजेन्द्र प्रसाद और जवाहर लाल के बीच तनाव और खटास का बीज आज़ादी के पूर्व ही पड़ गया था, जब कॉग्रेस अध्यक्ष के रूप में बोलते हुए जब उन्होने 1936 में कॉग्रेस-जनों को 'कॉमरेड' कह कर संबोधित किया, और घोषित किया कि कॉग्रेस का उद्देश्य 'निजी संपत्ति का उन्मूलन' और निजी उद्योग का 'सहकारी उद्योग' में परिवर्तित करना है। और साथ हे यह भी कहा कि "मैं चाहता हूँ कि कॉग्रेस एक समाजवादी संगठन बन जाये।"

समाजवाद गांधी जी को अस्वीकार था। अतएव राजेन्द्र प्रसाद ने कॉग्रेस की कार्यकारी समिति से त्यागपत्र दे दिया। त्यागपत्र पर वल्लभ भाई पटेल, राजगोपालाचारी, कृपलानी तथा तीन अन्य सदस्यों ने हस्ताक्षर किए। गांधी जी के बीच-बचाव करने पर राजेन्द्र प्रसाद ने त्यागपत्र तो वापिस ले लिया, किन्तु इससे राजेंद्र प्रसाद और नेहरू के बीच ऐसी गांठ पड़ गई, जो राजेन्द्र प्रसाद की मृत्यु के बाद भी बनी रही।

प्रसिद्ध पत्रकार दुर्गा दास अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'इंडिया फ़्रोम कर्ज़न टु नेहरू एंड आफ्टर' में लिखते हैं कि राजेन्द्र प्रसाद, नेहरू से सीधे, आमने-सामने बात करने से कतराते थे। एक तरह से वे उनसे डरते थे, क्योंकि जब भी बात होती थी, तो उसमें गर्मी आ जाती थी, और नेहरू आपे से बाहर हो जाते थे। इसलिए राजेन्द्र प्रसाद उनको अपनी बात लिख कर देना पसंद करते थे।

प्रथम राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री के बीच दूरी और अविश्वास लगातार बना रहा। राजेन्द्र प्रसाद नेहरू की तिब्बत नीति और हिन्दी-चीनी भाई-भाई की नीति से असहमत थे। नेहरू सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार और घोटालों से भी वह चिंतित थे। उन्होने राष्ट्रपति की अध्यक्षता में 'लोकपाल' की नियुक्ति का भी प्रस्ताव दिया, जिस पर प्रधान मंत्री ने कोई ध्यान नहीं दिया।

राज्यभाषा हिन्दी को ले कर भी दोनों में विभेद था। मुख्य-मंत्रियों की सभा (1961) को राष्ट्रपति ने लिखित सुझाव भेजा कि अगर भारत की सभी भाषाएँ देवनागरी लिपि अपना लें, जैसे योराप की सब भाषाएँ रोमन लिपि में लिखी जाती हैं, तो भारत की राष्ट्रीयता संपुष्ट होगी। सभी मुख्य-मंत्रियों ने इसे एकमत से स्वीकार कर लिया, किन्तु नेहरू की केंद्र सरकार ने इसे ठंडे बस्ते में ड़ाल दिया।

फरवरी 1963 में राजेन्द्र प्रसाद की मृत्यु हुई, तो नेहरू उनके अंतिम संस्कार में भाग लेने पटना नहीं गए। यही नहीं, उन्होने तत्कालीन राष्ट्रपति राधाकृष्णन को भी पटना न जाने की सलाह दी। राधाकृष्णन ने नेहरू के परामर्श की अवहेलना करके राजेन्द्र प्रसाद के अंतिम संस्कार मे भाग लिया। नेहरू ने राजेन्द्र प्रसाद की मृत्यु के बाद भी, उनसे अपनी शत्रुता निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

बी -255,सेक्टर-26,
नोयडा -201301;
फोन: 09891510230